International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अथर्ववेद पर पाश्चात्य वैदिक विद्वानों द्वारा किए गए वैदिक सिद्धान्तों का अध्ययन

शोधार्थी
उषा कुमावत
संस्कृत विभाग
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय
अस्थल बोहर, रोहतक

अनेक पाश्चात्य वैदिक विद्वानों द्वारा वेदों का अनुवाद सायण–भाष्य का अनुकरण ही है। इन विद्वानों ने अनुवाद करते समय स्थल–स्थल पर टिप्पणी के रूप में अपने मत व्यक्त किए हैं, जो विशेष महत्त्वपूर्ण हैं। अधिकांशतः विद्वानों ने अनुवाद या भाष्य के पूर्व वैदिक सिद्धान्तों का निरूपण किया है। इन विद्वानों के अनुवाद उतने महत्त्वपूर्ण नहीं हैं, जितना कि इनके द्वारा लिखित वैदिक साहित्य का इतिहास, वैदिक देवताओं के नामों की सूची, व्याकरण, आदि पुस्तकें महत्त्वपूर्ण हैं। इन पुस्तकों में इन्हें अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए पूर्ण अवसर मिला है। इन पुस्तकों के अध्ययन से विदित होता है कि इन विद्वानों के वेद–सम्बन्धी सिद्धान्त एवं मान्यताएँ भारतीय परम्परा के विरुद्ध थी। पाश्चात्य विद्वानों ने वेदार्थ के लिए ऐसी रीतियाँ अपनाई थी, जो भारतीय जनता के प्रतिकूल होने के कारण अत्यन्त ही आश्चर्यमय थी।

पाश्चात्य विद्वानों ने वेदार्थों का तुलनात्मक अध्ययन न करके वेदार्थों की रीति एवं वैदिक सिद्धान्तों का समीकरण उपस्थित किया है। इससे स्पष्ट है कि उन पाश्चात्य विद्वानों ने सायण के सिद्धान्तों एवं भारतीय वेदार्थ–परम्परा को किस मात्रा तक अंगीकार किया है, तथा इसके अतिरिक्त किन–किन प्रणालियों का अन्वेषण किया है। महर्षि दयानन्द का भाष्य इन पाश्चात्य विद्वानों के बाद का है। महर्षि दयानन्द पर पाश्चात्य विद्वानों के सिद्धान्तों एवं प्रणालियों की क्या प्रतिक्रिया एवं प्रभाव हुआ, यह उनके सिद्धान्तों के अध्ययन से स्पष्ट होगा।

वेदों के भाष्य, शब्दकोष, भाषा, टीका–टिप्पणी आदि की स्तरीयता निर्धारित करने में पाश्चात्य विद्वानों का महत्त्वपूर्ण प्रशंसनीय योगदान रहा है। सन् 1757 ई0 के लगभग भारत में अंग्रेजों द्वारा अंग्रेजी राज्य की स्थापना होती है, लगभग इसी समय अंग्रेजों द्वारा वैदिक एवं संस्कृत–साहित्य का अध्ययन प्रारम्भ होता है। ब्रिटिश शासकों की, भारत के शासन की बागडोर अपने हाथों में ले लेने की उत्सुकता ने उन्हें प्रारम्भ में भारतीय धर्म और नीति के अनुसार राज्य करने को विवश किया इसीलिए पदाधिकारियों ने पाश्चात्य विद्वानों को वैदिक साहित्य एवं अन्य संस्कृत–साहित्यों के अध्ययन के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, विदेशी विद्वानों को, सर्वप्रथम

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वैदिक साहित्य पढ़ने की आवश्यकता शासन–सम्बन्धी व्यवहारिक कठिनाई दूर करने के लिए हुई। तत्कालीन गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स यह अनुभव करते थे कि भारतीय विधि, रीति–रिवाज और धर्म के अनुसार भारत पर शासन करने में अधिक लाभ हैं। अतः इसी के अनुसार भारत का संविधान बनाया जाए। अप्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश पदाधिकारियों की अभिलाषा भारतीय धर्म–नीति और रीति–रिवाज की ओट में ईसाई धर्म, रीति–रिवाज और सभ्यता कायम करने की थी। यह बात लॉर्ड मैकाले के इस विचार से भी स्पष्ट होती है – "अंग्रेजी शिक्षा भारत में एक ऐसे वर्ग को उत्पन्न करेगी, जो रंग–रूप में भारतीय होगा, किन्तु दिमाग, कर्म और नैतिकता में अंग्रेज होगा।" (English education would train up a class of persons, Indian in blood and colour but English in taste, in opinions, in morals and intelligence.) वेदों का यथार्थ स्वरूप धर्मदेव वाचस्पति, पृ0 37.

प्रारम्भ में पाश्चात्य विद्वानों द्वारा भारतीय प्राचीन साहित्य के अध्ययन का कारण राजनीतिक था, किन्तु बाद में वे वेद एवं संस्कृत–साहित्य के उत्कृष्ट ज्ञान के कारण आकृष्ट हुए थे। भारतीय प्राचीन वाङ्मय की उत्कृष्टता से आकृष्ट होने पर भी वे वेदों का निराग्रह और निष्पक्ष अध्ययन नहीं कर सके। मैक्समूलर आदि पाश्चात्य विद्वानों द्वारा वैदिक साहित्य के अध्ययन के लिए अकथनीय परिश्रम, अपार धन और समय लगाने का उद्देश्य भी वैदिक धर्म के माध्यम से भारत में ईसाई मत का प्रचार करना ही था। मैक्समूलर के पत्रों एवं लेखों से विदित होता है कि, यद्यपि उन्होनें अपना सम्पूर्ण जीवन भारतीय ग्रन्थों की सेवा में अर्पित कर दिया था, फिर भी वे वैदिक धर्म और साहित्य के प्रति सच्चा अनुराग और निष्कपट न्याय न दिखा सके। मैक्समूलर ने अपनी पत्नी के पास पत्र लिखा था – "निश्चय ही मैं वेदों के सम्पादनादि का कार्य पूर्ण कर दूँगा, तथा यह भी निश्चित है कि इस कार्य को देखने के लिए मैं जीवित नहीं रहूँगा, तो भी मेरा यह ऋग्वेद का संस्करण और वेदों का अनुवाद भारत के लाखों लोगों के भाग्य और आत्माओं के विकास पर प्रभाव डालने वाला होगा। यह वेद भारतीयों के धर्मग्रन्थ का मूल है और मूल को दिखा देना उन्होनें पिछले तीन हज़ार वर्षों में जो कुछ ज्ञान प्राप्त किया है, उसको मूल–सहित उखाड़ देने का सबसे उत्तम तरीका है।" श्री पुंसे ने एक पत्र मैक्समूलर को लिखा है – "आपका कार्य भारतीयों को ईसाई बनाने के प्रथम और अत्यावश्यक कार्य को सुगम बनायेगा । आपका यह कार्य हमें समर्थ बनायेगा कि हम पुराने झूठे धर्म की सच्चे धर्म के साथ तुलना का आनन्द ले सकें।" उक्त उद्धरणों से ये स्पष्ट विदित होता है कि पाश्चात्य विद्वानों को अपने धर्मग्रन्थ के प्रति कितनी श्रद्धा एवं पक्षपात था।

"18वीं शती के मध्य में एक फ्रेंच मिशनरी ने लैटिन भाषा में अयथार्थ "यजुर्वेद" फ्रांस के विद्वान मि0 वाल्टेयर को दिया। उस समय उन्होनें उससे आकृष्ट होकर भारतवर्ष की विद्वत्ता की पर्याप्त प्रशंसा की, यद्यपि वाल्टे यर को यह ज्ञात न था कि यह असली यजुर्वेद का अनुवाद नहीं है, यदि असली दिया जाता तो संभवतः वह भारत का और भी अधिक प्रशंसक होता।" प्रायः इसी कार्य से विदेश में वेदाध्ययन का कार्य प्रारम्भ होता है। इसके बाद प्रो0 एफ0 रोजन ने ऋग्वेद पर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कार्य करना चाहा था, परन्तु 1837 ई0 में उनकी मत्यु के कारण यह कार्य सम्पूर्ण न हो सका, अतः 1835 ई0 में केवल ऋग्वेद का प्रथम अष्टक ही प्रकाशित हो सका। इसमें लेटिन अनुवाद भी था। इस कार्य को भी यूरोप में वेदाध्ययन का सूत्रपात कहा जा सकता है। उन्नसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में जर्मनी के अनेक विद्वानों ने अदम्य उत्साह और परिश्रम से अनुवाद, टीका–टिप्पणी आदि के कार्य किए। इनमें डॉ0 रुडाल्फ रॉथ, डॉ0 वेबर तथा डॉ0 मैक्समूलर का नाम अग्रगण्य है। इन विद्वानों में डॉ0 रॉथ का परिश्रम और साहस स्तुल्य है, क्योंकि सभी पाश्चात्य विद्वानों ने सायण–भाष्य का पूर्णतया अनुकरण करके वेदों का अनुवाद किया, किन्तु सर्वप्रथम रॉथ ही ऐसे मौलिक मनीषी चिन्तक थे जिन्होनें सायण के भाष्य का आधार न लेकर वेदों का अर्थ वेदों से ही करने का दृढ़ निश्चय किया। रॉथ के विचार में मध्यकालिक सायण प्राचीन वेदों के अर्थ करने में सर्वथा असमर्थ रहे हैं, अतः उनका अनुकरण करना उचित नहीं। वेद का अर्थ यज्ञपरक नहीं हो सकता, इस विचार से प्रेरित होकर, इन्होनें वेदार्थ करने के लिए ऐतिहासिक शैली को अपनाया। इसी दृष्टि से "सेंट पीटर्सवर्ग" संस्कृत जर्मन कोष नामक विशाल और महत्त्वपूर्ण वैदिक शब्द कोष तैयार किया। रॉथ नेइस ग्रन्थ में वैदिक शब्दों का विवेचन ऐतिहासिक क्रम से किया है, ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अर्थ करने वाले पाश्चात्य विद्वानों के लिये यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। जर्मन विद्वान् वेबर का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन्होनें अपने समय तक के समस्त संस्कृत वाङ्मय के इतिहास को क्रमबद्ध रूप से लिखा है। इनका "इन्दियना स्टूदियन" भी पौर्वात्य जगत् के वेद दर्शन, व्याकरण, शब्दकोष आदि उत्कृष्ट ग्रन्थों का ज्ञान–कोष है। यद्यपि इन सबके परिणाम जिस पर वे पहुँचे हैं, सर्वमान्य नहीं है, किन्तु परिश्रम और कार्य प्रशंसनीय हैं।

जर्मन के अनुवादकर्त्ताओं में ऋग्वेद के दो अनुवाद कर्त्ता लुडविग और ग्रासमैन भी हैं। लुडविग ने यह अनुवाद गद्य में किया था और ग्रासमैन ने पद्य में। इन दोनों विद्वानों ने अपने कल्पनापूर्ण भाष्य में कई वर्ष व्यतीत किए तथा अपने समय–पर्यन्त विद्यमान वेदों से अर्थ में परिवर्तन और परिशोधन लाने को दृढ़–प्रतिज्ञ हुए, जो न केवल अनावश्यक, अपितु पूर्णतया गलत भी है। इन विद्वानों का यह विचार था कि भारतीय भाष्यकार नियमानुसार त्रुटिपूर्ण होने के लिए विवश हैं। इस विचार ने इन विद्वानों को ऐतिहासिक और आलोचनापूर्ण शैली के अन्वेषण के लिए अधीर किया। इस शैली के द्वारा इन विद्वानों ने बहुत बड़ी–बड़ी भूलें की हैं, इस कारण हम इसे पूर्णतया अनुसरण नहीं कर सकते। गेल्डनर ने भी अपने जीवन का अधिकांश समय वेदाध्ययन में ही लगाया था। इन्होनें सन् 1923 ई0 में ऋग्वेद के प्रथम भाग का अनुवाद प्रकाशित किया। यह कार्य उनके परिपक्व अध्ययन का परिणाम हैं। इस पुस्तक में स्थल–स्थल पर विस्तृत टीका–टिप्पणी है। ऋग्वेद का दूसरा भाग भी छपने वाला था, किन्तु छप नहीं सका था। कैगी ने 70 सूक्तों का अनुवाद प्रकाशित किया है। इन्होनें ऋग्वेद के विषयों पर कुछ लेख संक्षिप्त सारगर्भित और सुन्दर भाषा में लिखे हैं। डॉ0 ग्रिफिथ ने भी वैदिक साहित्य के अध्ययन में अपना जीवन–व्यतीत किया जो काशी के गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज के अध्यक्ष थे। इन्होनें सन् 1889–92 ई0 के बीच वैदिक संहिताओं का अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित करवाया। अमेरिकन विद्वान् डॉ0 विटने ने अथर्ववेद की प्रस्तावना और टिप्पणी से युक्त एक उत्तम अनुवाद हारवर्ड सीरिज नं0 7 और 8

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

नाम से दो बड़े खण्ड़ों में प्रकाशित किया। यह अनुवाद संक्षिप्त है, किन्तु विद्वत्तापूर्ण और उत्कृष्ट है। डॉ0 विटने ने "संस्कृत ग्रामर" भी लिखा है। इस ग्रन्थ में डॉ0 विटने ने भाषा और ग्रामर का ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन करने का प्रयास किया है। डॉ0 कीथ ने कृष्ण यजुर्वेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया है। मैकडोनल और कीथ ने मिलकर "Vedic Index" लिखा है। इस ग्रन्थ में वैदिक रिपीटीशन (Vedic Repetition) लिखा है तथा इन्होनें एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ छपवाया है। उनकी यह पुस्तक उनकी अपरिमित विद्वत्ता अद्म्य उत्साह और परिश्रम का द्योतक है। डॉ0 ओल्डेन ने एक पुस्तक वेद सम्बन्धी "Die Religion Des Veda" लिखा है। इसमें इन्होनें सूक्तों के अर्थ में स्थल–स्थल पर अपना विचार व्यक्त किया है। प्रत्येक मंत्र में नवीन शैली से व्याकरण कोष, छन्द आदि का उत्तम संग्रह तैयार किया है। जेम्यूर ने 'Original Sanskrit Texts' 5 भागों में प्रकाशित किया है। पाश्चात्य विद्वानों में मैक्समूलर का कार्य स्तुल्य है। इन्होनें सायण के सम्पूर्ण ऋग्वेद के भाष्य का सम्पादन किया है। मैक्समूलर ने उक्त कार्य के अतिरिक्त 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' वैदिक धर्म एवं भाषा–सम्बन्धी कई पुस्तकें भी लिखी हैं। इस प्रकार, इन पाश्चात्य विद्वानों ने न केवल चारों वेदों के अनुवाद का काम किया है, अपितु वेद एवं संस्कृत साहित्य का कोष व्याकरण एवं इतिहास के अतिरिक्त स्वर, छन्द आदि विषयों पर ग्रन्थ भी लिखे हैं। उक्त विद्वानों में कुछेक ने अपना सम्पूर्ण जीवन ही वैदिक साहित्य के अध्ययन में लगा दिया था। वेद का अध्ययन करने वाले आधुनिक विद्वानों प्रो0 ओल्डेनवर्ग, हिलीब्रांड, कीथ पाड्यूसन, वीचन ग्रिसवोल्ड, विह्टनी, विण्टरनित्ज, जैकोवी, रीनन, आफेक्ट, थ्यूडोर, हौग, श्रूडर, वेनफे गास्ट्रा, वर्नेल कैलेंड, स्टेंन्सलर एगलिंग, कोनो वाकरनागेल, आर्नोल्ड आदि के नाम उल्लेख्य हैं।

यहाँ पाश्चात्य विद्वानों एवं उनके ग्रन्थों के अध्ययन से अवगत होता है कि कुछ अनुवाद सायण के आधार पर किए गए थे, किन्तु कुछ विद्वान् सायण–भाष्य के पूर्ण विरोधी थे। इन्होनें वैदिक साहित्य के इतिहास भाषा, स्वर, छन्द, देवता आदि पर भी कार्य किया है। अतः विचारणीय यह है कि इन्होनें वेद के अनुवाद एवं अन्य ग्रन्थों के लिखने के लिए किन–किन का अन्वेषण किया था, उसके विवेचन से पूर्व उनके द्वारा किए गए वेदों के अर्थों की विशेषताओं पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

कुछ विद्वानों का मन्त्रार्थ सायण–भाष्य का अनुवाद मात्र है। किन्तु अनुवाद के मध्य में जो टीका–टिप्पणी में विचार व्यक्त किए हुए मिलते हैं, वे सब इन लोगों की भाष्य–प्रणाली के द्योतक हैं। डॉ0 रॉथ एवं गेल्डनेर आदि कुछ विद्वान् सायण–भाष्य के पूर्ण विरोधी थे। इन विद्वानों का विचार था कि सायण वेद के तत्त्व को समझ न सके थे, क्योंकि वैदिक अध्यन की परम्परा सायण के पूर्व ही लुप्त हो चुकी थी। अतः भारतीय परम्परा के अनुसार याज्ञिक अर्थ ठीक नहीं, इसलिए वेदार्थ ऐतिहासिक क्रम से पुनः किया जाना चाहिए।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आर्यों ने वेदों के पर्याप्त सूक्तों की रचना अपने आदि निवास मध्य एशिया में कर ली थी और कुछ सूक्तों की रचना सप्तसिन्धु एवं भारत के अन्य स्थानों पर पहुँचने के बाद की। इसी हेतु वेदों के कुछ सूक्त हिन्दू होने की अपेक्षा, इण्डो–यूरोपियन अधिक हैं तथा आर्यों के भारत में बसने के पूर्व की स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं। वेदों के रचने में सैंकड़ों वर्षों का समय लगा है। अतः विश्व के प्रारम्भिक इतिहास को समझने के लिए वेद का स्थान महत्त्वपूर्ण है।

मनुष्य का ज्ञान क्रमशः विकसित होता है। जिस समय वेदों की रचना हुई थी, उस समय आर्य अर्द्ध विकसित अवस्था में थे। सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, पृथ्वी आदि प्राकृतिक वस्तुएँ आश्चर्यजनक थी। वे इनके रहस्यों से पूर्ण परिचित न होने के कारण, इनसे कभी भयभीत होते थे, तो कभी अपनी रक्षा के लिए इनका आह्वान करते थे। वे सूर्य, चन्द्र आदि प्राकृतिक तत्त्वों को सम्बोधित करके कविता रूप में अपने मन के उद्‌गार को अभिव्यक्त करते थे। इसी का परिणाम वेद है। अतः वेद में प्राकृतिक पूजा एवं बहुदेवता का वर्णन है। वेदों की भाषा "इण्डो–यूरोपियन भाषा" के परिवार की है। वैदिक भाषा सभी भाषाओं की जननी है और कुछ प्राचीन भाषाओं की बहन है। पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार भारतीय आर्य भारत में आने के पूर्व "आदि भाषा" बोलते थे। इसी भाषा में वेद लिखे गए हैं। भाषा का विकास क्रमशः होता है। वेद जिस समय रचे गए थे, उस समय भाषाएँ पूर्ण विकसित नहीं हुई थी। अतः इसकी भाषा अर्द्धविकसित है।

"इण्डो–यूरोपियन परिवार" के सभी रीति–रिवाज, गाथा आदि का विकास एक समान हुआ है। अतः वेदों के वास्तविक रहस्य तक पहुँचने के लिए तुलनात्मक भाषा–विज्ञान के अतिरिक्त भारतोत्तर देशों के रीति–रिवाज, गाथा धर्म आदि की परस्परिक तुलना वैदिक धर्म के मूल तक पहुँचा सकती है। वेदार्थ की दृष्टि से "इण्डो–ईरानियन" भाषा का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। "आदि निवास" से अलग होने अर्थात् भारतीय आर्य के भारत में पहुँचने और ईरानी आर्य के ईरान में पहुँचने के पूर्व दोनों का घनिष्ठ सम्बन्ध था। भारतीय आर्यों ने भारत में प्रविष्ट होने पर वेद की रचना की तो ईरानी आर्यों ने ईरान में प्रविष्ट होने के बाद "अवेस्ता" की रचना की। "इण्डो–यूरोपियन भाषा" के परिवार में, वेद और अवेस्ता की भाषा में विशेष साम्य है। अतः वेदार्थ के लिए अवेस्ता की भाषा की जानकारी आवश्यक है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। यह विशेष समय के समाज के कई मनुष्यों की देन है। वेदार्थ के लिए ब्राह्मण–ग्रन्थ, निरुक्त एवं वेदांग उपयोगी नहीं है, क्योंकि ये सब किसी न किसी विशेष मत से प्रभावित हैं। वेदार्थ की भारतीय प्रणाली पूर्णतः गलत एवं भ्रांतिपूर्ण है, क्योंकि इस प्रणाली में भारतीय स्थितियों एवं विचारों को विशेष महत्त्व दिया जाता है, जबकि वेद में इसका कोई महत्त्व नहीं है। पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि में वेदार्थ के लिए देवता, छन्द, ऋषि, स्वर, प्रकरण आदि का विशेष महत्त्व नहीं है, इसलिए पाश्चातय विद्वानों ने मंत्र के अर्थ में उक्त विषयों पर विशेष प्रकाश न डालकर, केवल मात्र वैदिक शब्दों के ऐतिहासिक क्रम पर विशेष ध्यान दिया है। मन्त्रों के

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रारम्भ में पाए जाने वाले ऋषि, मन्त्रों के अर्थद्रष्टा नहीं है, अपितु इनके रचयिता हैं। मन्त्रान्तर्गत जो ऋषिवाची पद उपलब्ध होते हैं, वे मन्त्रकर्त्ता ऋषियों के इतिवृत्त के द्योतक हैं। ये ऋषि साधारण व्यक्ति थे।

उक्त विशेषताओं के अध्ययन से स्पष्ट विदित हुआ है कि पाश्चात्य विद्वानों के समक्ष वेदों के अर्थों को समझने के लिए ब्राह्मण ग्रन्थ, निरुक्त तथा अन्य वेदांग थे, किन्तु इन सभी का सम्यक् अध्ययन करके, उनके अनुसार अर्थ करना इनके लिए दुष्कर कार्य था। भारतीय पद्धति से अर्थ करने के लिए अतीव धैर्य एवं समय की आवश्यकता थी, जिसके लिए विद्वान् पूर्णतः तैयार नहीं थे। फलतः, इन विद्वानों ने सायण–भाष्य का सहारा लिया। इन लोगों ने सायण–भाष्य से अपने विचारोपयोगी बातों को ही ग्रहण किया और अन्य बातों को परे छोड़कर तुलनात्मक भाषा–विज्ञान, तुलनात्मक गाथा, धर्म एवं इतिहास की प्रणाली का अन्वेषण किया। सायण–भाष्य के अनुसार अर्थ करते हुए उन्होनें स्थल–स्थल पर जो टीका–टिप्पणी की एवं अन्य पुस्तकें लिखी, इनमें तुलनात्मक भाषा–विज्ञान, तुलनात्मक गाथा, धर्म एवं इतिहास का पूर्ण उपयोग किया है। इस तथ्य से पाश्चात्य विद्वानों के पुस्तकों को पढ़ने वाले पूर्ण परिचित हैं। यहाँ पाश्चात्य वेदार्थ की शैलियों का समीकरण किया जाता है। इस समीकरण से स्पष्ट होगा कि ये प्रणाली वेदार्थ के लिए उपयोगी है या नहीं।

रॉथ और विटने (Rudolph Roth, W.D. Whitney ने अथर्ववेद संहिता (शौनकीय शाखा) का सर्वप्रथम सम्पादन किया और 1856 ई0 में उसे प्रकाशित किया।

ब्लूमफील्ड और गार्बे (M. Bloomfield, R. Garbe) ने अथर्ववेद की पैप्पलाद–शाखा की एक अति जीर्ण, काश्मीर से शारदा लिपि में प्राप्त, प्रति से फोटो–प्रति तीन बड़ी जिल्दों में 1901 में छपवाई।

कैलेन्ड ने अथर्वसंहिता का एक आलोचनात्मक संस्करण उट्रिच (हालैंड) से प्रकाशित किया है।

ग्रिफिथ ने अथर्ववेद का अंग्रेजी में पद्यानुवाद वाराणसी से 1895–1898 में छपवाया है।

विटने और लैनमैन (W.H. Whitney, C.R. Lanman) ने अथर्ववेद का अंग्रेजी में अनुवाद, 150 पृष्ठ की भूमिका तथा विविध टिप्पणियों से युक्त, 1905 ई0 में 2 भागों में प्रकाशित किया। यह 1 हजार से अधिक पृष्ठ का ग्रन्थ है।

ब्लूमफील्ड ने पैप्पलाद–संहिता का अंग्रेजी में अनुवाद 1902 में प्रकाशित किया।

गास्टरा (D. Gaastra) ने गोपथ ब्राह्मण का एक सुन्दर संस्करण 1919 ई0 में प्रकाशित किया।

ब्लूमफील्ड ने अथर्ववेदीय कौशिक–सूत्र 1890 ई0 में प्रकाशित किया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची

1. अथर्ववेद–प्रतिशाख्य, विलियम डी. विटने।
2. वैदिक साहित्य का आलोचनात्म इतिहास, भाग–1, डा0 जयदेव विद्यालंकार, हरियाणा साहित्य अकादमी चण्डीगढ़। 1991
3. वैदिकी, डॉ0 बलदेव सिंह मेहरा, अभिषेक प्रकाशन, दिल्ली।
4. वेदों का यथार्थ स्वरूप, धर्मदेव वाचस्पति।
5. Atharva-Veda-Samhita, Translated into English with Critical and Exegetical Commentory by William Dwight Whitney (Two Ved), Motilal Banarsidas Delhi-7, 2nd Ed. 1971.
6. Atharva Veda and Gopatha Brahmana by M. Bloomfield.
7. Atharva-Veda-Pratisakhya, William D. Whitney.
9. Dictionary of Sanskrit Grammer – Abhyankar Oriental Institute.
10. History of Indian Literature, by Wintermitz.
11. Srauta Sacrifices in Atharva Veda , Dr. B.S. Mehra, Abhishek Prakashan, New Delhi. 2000.
12. Atharvaveda Pratisakhya, William D. Whitney.